

سُورَةُ الرَّعْدِ

Surah 13 — Ar-Ra'd (The Thunder) · Medinan · 43 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ ۝ وَالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ
الْحَقُّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ

अलिफ़ लाम मीम रा ये किताब (कुरान) की आयतें हैं और तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से जो कुछ तुम्हारे पास नाज़िल किया गया है बिल्कुल ठीक है मगर बहुतेरे लोग ईमान नहीं लाते

2

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمُوتَ بِغَيْرِ عَمَدٍ ۝ تَرَوْنَهَا ۝ ثُمَّ أَسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۝ وَسَخَّرَ
الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۝ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۝ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ
لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ

खुदा वही तो है जिसने आसमानों को जिन्हें तुम देखते हो बगैर सुतून (खम्बों) के उठाकर खड़ा कर दिया फिर अर्श (के बनाने) पर आमादा हुआ और सूरज और चाँद को (अपना) ताबेदार बनाया कि हर एक वक्त मुकर्ररा तक चला करते हैं वही (दुनिया के) हर एक काम का इन्तेज़ाम करता है और इसी ग़रज़ से कि तुम लोग अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने का यक़ीन करो

3

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رُوسَىٰ وَأَنْهَرًا ۝ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا
زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ ۝ يُغْشَىٰ اللَّيْلُ النَّهَارَ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ

(अपनी) आयतें तफ़सीलदार बयान करता है और वह वही है जिसने ज़मीन को बिछाया और उसमें (बड़े बड़े) अटल पहाड़ और दरिया बनाए और उसने हर तरह के मेवों की दो दो किस्में पैदा की (जैसे खट्टे मीठे) वही रात (के परदे) से दिन को ढाक देता है इसमें शक़ नहीं कि जो लोग और ग़ौर व फ़िक्र करते हैं उनके लिए इसमें (कुदरत खुदा की) बहुतेरी निशानियाँ हैं

4

وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ ۚ مُتَجَوِّرَةٌ ۚ وَجَنَّتْ ۚ مِّنْ أَعْنَبٍ ۚ وَزَرْعٌ ۚ وَنَخِيلٌ ۚ صِنْوَانٌ ۚ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ ۚ يُسْقَىٰ بِمَاءٍ ۚ وَحِدٍ ۚ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ فِي الْأَكْلِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۚ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ

और खुरमों (खजूर) के दरख्त की एक जड़ और दो याखें और बाज़ अकेला (एक ही याख का) हालाँकि सब एक ही पानी से सीचे जाते हैं और फलों में बाज़ को बाज़ पर हम तरजीह देते हैं बेशक जो लोग अक़ल वाले हैं उनके लिए इसमें (कुदरत खुदा की) बहुतेरी निशानियाँ हैं

5

ۚ وَإِن تَعْجَبْ فَعَجَبٌ ۚ قَوْلُهُمْ أَءِذَا كُنَّا تُرَابًا أَعِنَّا لَفِي خَلْقٍ ۚ جَدِيدٍ ۚ أَوَلَيْكَ ۚ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بِرَبِّهِمْ ۚ وَأَوَلَيْكَ ۚ الْأَغْلُلُ ۚ فِي أَعْنَاقِهِمْ ۚ وَأَوَلَيْكَ ۚ أَصْحَابُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ

और अगर तुम्हें (किसी बात पर) ताज्जुब होता है तो उन कुफ़ारों को ये क़ौल ताज्जुब की बात है कि जब हम (सड़गल कर) मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम (फिर दोबारा) एक नई जहन्नुम में आँएँगे ये वही लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार के साथ कुफ़ किया और यही वह लोग हैं जिनकी गर्दनो में (क़यामत के दिन) तौक़ पड़े होंगे और यही लोग जहन्नुमी हैं कि ये इसमें हमेशा रहेंगे

6

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلَتُ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ ۚ لِلنَّاسِ عَلَىٰ ظُلْمِهِمْ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ

और (ऐ रसूल) ये लोग तुम से भलाई के क़बूल ही बुराई (अज़ाब) की जल्दी मचा रहे हैं हालाँकि उनके पहले (बहुत से लोगों की) सज़ाएं हो चुकी हैं और इसमें शक़ नहीं की तुम्हारा परवरदिगार बावजूद उनकी शरारत के लोगों पर बड़ा बख़्शिश (करम) वाला है और इसमें भी शक़ नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार यक़ीनन सख़्त अज़ाब वाला है

7

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ ۚ مِّن رَّبِّهِ ۚ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ ۚ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ

और वो लोग काफ़िर हैं कहते हैं कि इस शख़्स (मोहम्मद) पर उसके परवरदिगार की तरफ से कोई निशानी (हमारी मर्जी के मुताबिक़) क्यों नहीं नाज़िल की जाती ऐ रसूल तुम तो सिर्फ़ (ख़ौफ़े खुदा से) डराने वाले हो

8

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ ۝ بِمِقْدَارٍ

और हर क्रौम के लिए एक हिदायत करने वाला है हर मादा जो कि पेट में लिए हुए है और उसको खुदा ही जानता है व बच्चा दानियों का घटना बढ़ना (भी वही जानता है) और हर चीज़ उसके नज़दीक एक अन्दाज़े से है

9

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرِ الْمُتَعَالِ

(वही) बातिन (छुपे हुवे) व ज़ाहिर का जानने वाला (सब से) बड़ा और आलीशान है

10

سَوَاءٌ ۖ مِنْكُمْ مَّنْ أَسْرَ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ ۖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ ۖ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ ۖ بِالنَّهَارِ

तुम लोगों में जो कोई चुपके से बात कहे और जो शरूख ज़ोर से पुकार के बोले और जो शरूख रात की तारीकी (अंधेरे) में छुपा बैठा हो और जो शरूख दिन दहाड़ें चला जा रहा हो

11

لَهُ ۖ مُعَقَّبَتٌ ۖ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ ۖ يَحْفَظُونَهُ ۖ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا ۖ مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۖ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا ۖ أَفْلا مَرَدٍّ لَهُ ۖ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُونِهِ ۖ مِنْ وَالٍ

(उसके नज़दीक) सब बराबर हैं (आदमी किसी हालत में हो मगर) उस अकेले के लिए उसके आगे उसके पीछे उसके निगेहबान (फरिश्ते) मुक़रर हैं कि उसको हुक्म खुदा से हिफाज़त करते हैं जो (नेअमत) किसी क्रौम को हासिल हो बेशक वह लोग खुद अपनी नफ्सानी हालत में तग्य्युर न डालें खुदा हरगिज़ तग्य्युर नहीं डाला करता और जब खुदा किसी क्रौम पर बुराई का इरादा करता है तो फिर उसका कोई टालने वाला नहीं और न उसका उसके सिवा कोई वाली और (सरपरस्त) है

12

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا ۖ وَطَمَعًا ۚ وَيُنَشِّئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ

वह वही तो है जो तुम्हें डराने और लालच देने के वास्ते बिजली की चमक दिखाता है और पानी से भरे बोझल बादलों को पैदा करता है

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَن يَشَاءُ وَهُمْ يُجَدِّلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْمِحَالِ

और गर्ज और फरिश्ते उसके खौफ से उसकी हम्दो सना की तस्बीह किया करते हैं वही (आसमान से) बिजलियों को भेजता है फिर उसे जिस पर चाहता है गिरा भी देता है और ये लोग खुदा के बारे में (ख्वामाख्वाह) झगड़े करते हैं हालाँकि वह बड़ा सख्त क़वत वाला है

لَهُ ۥ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۚ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ ۚ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُم بِشَيْءٍ إِلَّا كَبْسِطٍ كَفِّهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَلِّغِهِ ۚ ۚ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَلٍ ۚ

(मुसीबत के वक्त) उसी का (पुकारना) ठीक पुकारना है और जो लोग उसे छोड़कर (दूसरों को) पुकारते हैं वह तो उनकी कुछ सुनते तक नहीं मगर जिस तरह कोई शख्स (बगैर उंगलियां मिलाए) अपनी दोनों हथेलियाँ पानी की तरफ फैलाए ताकि पानी उसके मुँह में पहुँच जाए हालाँकि वह किसी तरह पहुँचने वाला नहीं और (इसी तरह) काफिरों की दुआ गुमराही में (पड़ी बहकी फिरा करती है)

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا ۚ وَكَرْهًا ۚ وَظِلُّهُمْ بِالْغُدُوِّ وَأَلْوَاحٍ ۚ

और आसमानों और ज़मीन में (मखलूक़ात से) जो कोई भी है खुशी से या ज़बरदस्ती सब (अत्लाह के आगे सर बसजूद हैं और (इसी तरह) उनके साथ भी सुबह व शाम (सजदा करते हैं) (15) (सजदा)

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلِ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ ۚ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا ۚ وَلَا ضَرًّا ۚ ا ۚ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ ۚ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا ۚ كَخَلْقِهِ ۚ فَتَشَبَّهُ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۚ قُلِ اللَّهُ خَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ

(ऐ रसूल) तुम पूछो कि (आखिर) आसमान और ज़मीन का परवरदिगार कौन है (ये क्या जवाब देगें) तुम कह दो कि अल्लाह है (ये भी कह दो कि क्या तुमने उसके सिवा दूसरे कारसाज़ बना रखे हैं जो अपने लिए आप न तो नफे पर काबू रखते हैं न ज़रर (नुकसान) पर (ये भी तो) पूछो कि भला (कहीं) अन्धा और आँखों वाला बराबर हो सकता है (हरगिज़ नहीं) (या कहीं) अंधेरा और उजाला बराबर हो सकता है (हरगिज़ नहीं) इन लोगों ने खुदा के कुछ शरीक ठहरा रखे हैं क्या उन्होंने खुदा ही की सी मखलूक पैदा कर रखी है जिनके सबब मखलूकात उन पर मुशतबा हो गई है (और उनकी खुदाई के कायल हो गए) तुम कह दो कि खुदा ही हर चीज़ का पैदा करने वाला और वही यकता और सिपर (सब पर) ग़ालिब है

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ ۚ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا ۚ ا رَابِئًا ۚ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۚ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً ۚ ۚ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ

उसी ने आसमान से पानी बरसाया फिर अपने अपने अन्दाज़े से नाले बह निकले फिर पानी के रेले पर (जोश खाकर) फूला हुआ झाग (फेन) आ गया और उस चीज़ (धातु) से भी जिसे ये लोग ज़ेवर या कोई असबाब बनाने की गरज़ से आग में तपाते हैं इसी तरह फेन आ जाता है (फिर अलग हो जाता है) युं खुदा हक़ व बातिल की मसले बयान फरमाता है (कि पानी हक़ की मिसाल और फेन बातिल की) गरज़ फेन तो खुशक होकर ग़ायब हो जाता है जिससे लोगों को नफा पहुँचता है (पानी) वह ज़मीन में ठहरा रहता है युं खुदा (लोगों के समझाने के वास्ते) मसले बयान फरमाता है

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْحُسْنَىٰ ۚ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ ۙ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا ۖ وَمِثْلَهُ ۙ مَعَهُ ۙ لَافْتَدَوْا بِهِ ۗ أَوْ لَكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ
وَمَاؤْلَهُمْ جَهَنَّمَ ۙ وَيُسَّ الْمِهَادُ

जिन लोगों ने अपने परवरदिगार का कहना माना उनके लिए बहुत बेहतरी है और जिन लोगों ने उसका कहा न माना (क्रयामत में उनकी ये हालत होगी) कि अगर उन्हें रुए ज़मीन के सब खज़ाने बल्कि उसके साथ इतना और मिल जाए तो ये लोग अपनी नजात के बदले उसको (ये खुशी) दे डालें (मगर फिर भी कोई फायदा नहीं) यही लोग हैं जिनसे बुरी तरह हिसाब लिया जाएगा और आखिर उन का ठिकाना जहन्नुम है और वह क्या बुरी जगह है

ۚ أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ
أُو۟لُوا۟ الْأَلْبَابِ

(ऐ रसूल) भला वह शरूष जो ये जानता है कि जो कुछ तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल हुआ है बिल्कुल ठीक है कभी उस शरूष के बराबर हो सकता है जो मुत्तलिक (पूरा) अंधा है (हरगिज़ नहीं)

الَّذِينَ يُوفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ

इससे तो बस कुछ समझदार लोग ही नसीहत हासिल करते हैं वह लोग है कि खुदा से जो एहद किया उसे पूरा करते हैं और अपने पैमान को नहीं तोड़ते

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ ۚ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ
الْحِسَابِ

(ये) वह लोग हैं कि जिन (ताल्लुक्रात) के क़ायम रखने का खुदा ने हुक्म दिया उन्हें क़ायम रखते हैं और अपने परवरदिगार से डरते हैं और (क्रयामत के दिन) बुरी तरह हिसाब लिए जाने से खौफ खाते हैं

وَالَّذِينَ صَبَرُوا[؟] ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا[؟] الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا[؟] مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا[؟] وَعَلَانِيَةً[؟] وَيَدْرُءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أَوْ[؟] لِّلِكَ لَهُمْ عُقَبَى الدَّارِ

और (ये) वह लोग हैं जो अपने परवरदिगार की खुशनूदी हासिल करने की गरज से (जो मुसीबत उन पर पड़ी है) झेल गए और पाबन्दी से नमाज़ अदा की और जो कुछ हमने उन्हें रोज़ी दी थी उसमें से छिपाकर और खुल कर खुदा की राह में खर्च किया और ये लोग बुराई को भी भलाई स दफा करते हैं -यही लोग हैं जिनके लिए आखिरत की खूबी मखसूस है

جَنَّتْ عَدْنٌ[؟] يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ ءَابَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ[؟] وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ[؟]

(यानि) हमेशा रहने के बाग़ जिनमें वह आप जाएंगे और उनके बाप, दादाओं, बीवियों और उनकी औलाद में से जो लोग नेको कार है (वह सब भी) और फरिश्ते बेहश्त के हर दरवाजे से उनके पास आएंगे

سَلَّمَ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ[؟] فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ

और सलाम अलैकुम (के बाद कहेंगे) कि (दुनिया में) तुमने सब्र किया (ये उसी का सिला है देखो) तो आखिरत का घर कैसा अच्छा है

وَالَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ[؟] بَعْدِ مِيثَاقِهِ[؟] وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ[؟] أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ[؟] أَوْ[؟] لِّلِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ

और जो लोग खुदा से एहद व पैमान को पक्का करने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन (तालुकात बाहमी) के क़ायम रखने का खुदा ने हुक्म दिया है उन्हें क़तआ (तोड़ते) करते हैं और रूए ज़मीन पर फ़साद फैलाते फिरते हैं ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए लानत है और ऐसे ही लोगों के वास्ते बड़ा घर (जहन्नुम) है

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ[؟] وَفَرِحُوا[؟] بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَّعٌ[؟]

और खुदा ही जिसके लिए चाहता है रोज़ी को बढ़ा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग करता है और ये लोग दुनिया की (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी पर बहुत निहाल हैं हालाँकि दुनियावी ज़िन्दगी (नईम) आखिरत के मुक़ाबिल में बिल्कुल बेहकीक़त चीज़ है

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ ۚ مِّن رَّبِّهِ ۚ ۚ قُلْ إِنَّا اللَّهُ يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي ۖ إِلَيْهِ مَن أُنَابَ

और जिन लोगों ने कुफ्र एख्तियार किया वह कहते हैं कि उस (शख्स यानि तुम) पर हमारी ख्वाहिश के मुवाफिक कोई मौजिज़ा उसके परवरदिगार की तरफ से क्यों नहीं नाज़िल होता तुम उनसे कह दो कि इसमें शक नहीं कि खुदा जिसे चाहता है गुमराही में छोड़ देता है

الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُم بِذِكْرِ اللَّهِ ۚ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ

और जिसने उसकी तरफ रुजू की उसे अपनी तरफ पहुँचने की राह दिखाता है (ये) वह लोग हैं जिन्होंने ईमान कुबूल किया और उनके दिलों को खुदा की चाह से तसल्ली हुआ करती है

الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحَسَنُ مَا بُرِّقُوا

जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनके वास्ते (बेहशत में) तूबा (दरख्त) और खुशहाली और अच्छा अन्जाम है

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ ۚ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهَا أُمَمٌ ۚ لِّتَتْلُوَا ۚ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ ۚ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابُ

(ऐ रसूल जिस तरह हमने और पैग़म्बर भेजे थे) उसी तरह हमने तुमको उस उम्मत में भेजा है जिससे पहले और भी बहुत सी उम्मतें गुज़र चुकी हैं -ताकि तुम उनके सामने जो कुरान हमने वही के ज़रिए से तुम्हारे पास भेजा है उन्हें पढ़ कर सुना दो और ये लोग (कुछ तुम्हारे ही नहीं बल्कि सिरे से) खुदा ही के मुन्किर हैं तुम कह दो कि वही मेरा परवरदिगार है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और उसी तरफ रुजू करता हूँ

وَلَوْ أَنَّ قُرْءَانًا ۚ سِيرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتَى ۚ بَلِ
 لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۚ أَفَلَمْ يَأْسِ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ أَنْ لَّوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ
 جَمِيعًا ۚ وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا ۚ قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا ۚ
 مِّنْ دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ

और अगर कोई ऐसा कुरान (भी नाज़िल होता) जिसकी बरकत से पहाड़ (अपनी जगह) चल खड़े होते या उसकी वजह से ज़मीन (की मुसाफ़त (दूरी)) तय की जाती और उसकी बरकत से मुर्दे बोल उठते (तो भी ये लोग मानने वाले न थे) बल्कि सच यूँ है कि सब काम का एख्तेयार खुदा ही को है तो क्या अभी तक ईमानदारों को चैन नहीं आया कि अगर खुदा चाहता तो सब लोगों की हिदायत कर देता और जिन लोगों ने कुफ़्र एख्तेयार किया उन पर उनकी करतूत की सज़ा में कोई (न कोई) मुसीबत पड़ती ही रहेगी या (उन पर पड़ी) तो उनके घरों के आस पास (गरज़) नाज़िल होगी (ज़रूर) यहाँ तक कि खुदा का वायदा (फतेह मक्का) पूरा हो कर रहे और इसमें शक़ नहीं कि खुदा हरगिज़ ख़िलाफ़े वायदा नहीं करता

وَلَقَدْ أَسْتَهْزِئَ بِرُسُلٍ ۚ مِّنْ قَبْلِكَ فَأَمَلَيْتُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ
 عِقَابِ

और (ऐ रसूल) तुमसे पहले भी बहुतेरे पैग़म्बरों की हँसी उड़ाई जा चुकी है तो मैंने (चन्द रोज़) काफ़िरों को मोहलत दी फिर (आख़िर कार) हमने उन्हें ले डाला फिर (तू क्या पूछता है कि) हमारा अज़ाब कैसा था

أَفَمَن هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ ۚ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوا ۚ لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ سَمُّوهُمْ ۚ
 أَمْ تُنَبِّئُونَهُ ۚ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بَظْهَرٍ ۚ مِّنَ الْقَوْلِ ۚ بَلْ زِينٌ ۚ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ
 مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا ۚ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ ۚ مِن هَادٍ ۚ

क्या जो (खुदा) हर एक शख्स के आमाल की ख़बर रखता है (उनको युं ही छोड़ देगा हरगिज़ नहीं) और उन लोगों ने खुदा के (दूसरे दूसरे) शरीक ठहराए (ऐ रसूल तुम उनसे कह दो कि तुम आख़िर उनके नाम तो बताओं या तुम खुदा को ऐसे शरीक़ों की ख़बर देते हो जिनको वह जानता तक नहीं कि वह ज़मीन में (किधर बसते) हैं या (निरी ऊपर से बातें बनाते हैं बल्कि (असल ये है कि) काफ़िरों को उनकी मक्कारियाँ भली दिखाई गई है और वह (गोया) राहे रास्त से रोक दिए गए हैं और जिस शख्स को खुदा गुमराही में छोड़ दे तो उसका कोई हिदायत करने वाला नहीं

لَهُمْ عَذَابٌ ۚ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۚ

इन लोगों के वास्ते दुनियावी ज़िन्दगी में (भी) अज़ाब है और आखिरत का अज़ाब तो यक़ीनी और बहुत सख्त खुलने वाला है (और) (फिर) खुदा (के ग़ज़ब) से उनको कोई बचाने वाला (भी) नहीं

ۚ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ ۚ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ أَكْثَلَهَا دَائِمٌ ۚ وَظِلُّهَا ۚ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا ۚ ۚ وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ

जिस बाग़ (बेहश्त) का परहेज़गारों से वायदा किया गया है उसकी सिफत ये है कि उसके नीचे नहरें जारी होगी उसके मेवे सदाबहार और ऐसे ही उसकी छाँव भी ये अन्जाम है उन लोगों को जो (दुनिया में) परहेज़गार थे और काफ़िरों का अन्जाम (जहन्नुम की) आग है

وَالَّذِينَ ءَاتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ ۚ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ ۚ ۚ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ ۚ ۚ إِلَيْهِ أَدْعُوا ۚ وَإِلَيْهِ مَابِ

और (ए रसूल) जिन लोगों को हमने किताब दी है वह तो जो (एहकाम) तुम्हारे पास नाज़िल किए गए हैं सब ही से खुश होते हैं और बाज़ फिरके उसकी बातों से इन्कार करते हैं तुम (उनसे) कह दो कि (तुम मानो या न मानो) मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मैं खुदा ही की इबादत करूँ और किसी को उसका शरीक न बनाऊँ मैं (सब को) उसी की तरफ बुलाता हूँ और हर शख्स को हिर फिर कर उसकी तरफ जाना है

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۚ ۚ وَلَئِنْ أَتَبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا وَاقٍ ۚ

और यूँ हमने उस कुरान को अरबी (ज़बान) का फरमान नाज़िल फरमाया और (ए रसूल) अगर कहीं तुमने इसके बाद को तुम्हारे पास इल्म (कुरान) आ चुका उन की नफसियानी ख्वाहिशों की पैरवी कर ली तो (याद रखो कि) फिर खुदा की तरफ से न कोई तुम्हारा सरपरस्त होगा न कोई बचाने वाला

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا ۖ وَذُرِّيَّةً ۖ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ لِكُلِّ أَجَلٍ ۖ كِتَابٌ ۖ

और हमने तुमसे पहले और (भी) बहुतेरे पैगम्बर भेजे और हमने उनको बीवियाँ भी दी और औलाद (भी अता की) और किसी पैगम्बर की ये मजाल न थी कि कोई मौजिजा खुदा की इजाजत के बगैर ला दिखाए हर एक वक्त (मौऊद) के लिए (हमारे यहाँ) एक (क्रिस्म की) तहरीर (होती) है

يَمْحُوهُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ ۖ وَعِنْدَهُ ۖ أُمُّ الْكِتَابِ

फिर इसमें से खुदा जिसको चाहता है मिटा देता है और (जिसको चाहता है बाकी रखता है और उसके पास असल किताब (लौहे महफूज़) मौजूद है

وَإِن مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ

और (ए रसूल) जो जो वायदे (अज़ाब वगैरह के) हम उन कुफ़ारों से करते हैं चाहे, उनमें से बाज़ तुम्हारे सामने पूरे कर दिखाएँ या तुम्हें उससे पहले उठा लें बहर हाल तुम पर तो सिर्फ़ एहकाम का पहुँचा देना फर्ज है

أَوَلَمْ يَرَوْا ۖ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۖ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقَّبَ لِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ

और उनसे हिसाब लेना हमारा काम है क्या उन लोगों ने ये बात न देखी कि हम ज़मीन को (फ़तुहाते इस्लाम से) उसके तमाम एतराफ़ (चारो ओर) से (सवाह कुफ़ में) घटाते चले आते हैं और खुदा जो चाहता है हुक्म देता है उसके हुक्म का कोई टालने वाला नहीं और बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۖ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ لِمَن عُقِبَى الدَّارِ

और जो लोग उन (कुफ़ार मक्के) से पहले हो गुज़रे हैं उन लोगों ने भी पैगम्बरों की मुखालफ़त में बड़ी बड़ी तदबीर की तो (खाक न हो सका क्योंकि) सब तदबीर तो खुदा ही के हाथ में हैं जो शरख़ जो कुछ करता है वह उसे खूब जानता है और अनक़रीब कुफ़ार को भी मालूम हो जाएगा कि आखिरत की खूबी किस के लिए है

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لَسْتَ مُرْسَلًا ۖ ا ۚ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۚ ا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ ۚ عِلْمُ الْكِتَابِ

और (ऐ रसूल) काफिर लोग कहते हैं कि तुम पैग़म्बर नहीं हो तो तुम (उनसे) कह दो कि मेरे और तुम्हारे दरमियान मेरी रिसालत की गवाही के वास्ते खुदा और वह शख्स जिसके पास (आसमानी) किताब का इल्म है काफी है